

मनोज
चित्र
कथा

संख्या 55

सोलसे टक्कर

डबल सीक्रेट एजेंट ००½
राम-रहीम





लेखक:
बिगल घटर्जी

मौत से टक्कर

चित्रांकन:
प्रणय मुनिक

ब्रह्माण्ड के दो अनंत गह वायटोम और जैकूला में वैज्ञानिक युद्ध छिड़ता है और जैकूला का सम्राट मंडीला अपने देश की बाहर-बाहर की हार से चिन्तित होकर अपनी कोरों के कमान्डर जोबो को पृथ्वी पर अपने एक मित्र प्रोफेसर भास्कर से सहायता मांगने भेजता है। उनका यान भारत के ही एक पहाड़ी क्षेत्र में उतरता है और वहां कमाण्डर जोबो की मुलाकात बाम-बहीम से होती है। बाम, बहीम को वहीं छोड़ प्रोफेसर भास्कर को लेने चला जाता है, लेकिन अगले दिन सुबह जब बाम प्रोफेसर को लेकर वहां पहुंचता है तो जैकूला के यान पर भारतीय फोर्स आक्रमण कर चुकी होती है। बाम उस आक्रमण को रोकवाने के लिये प्रोफेसर के साथ किसी प्रकार बैनियों का धरा तोड़कर यान की ओर भाग निकलने में सफल हो जाता है, लेकिन—उधो क्या होता है—? यह जानने के लिये पढ़ें प्रस्तुत चित्रकथा 'मौत से टक्कर'।

भारत का शिथिल होता आक्रमण अब भी जैकूला के यान पर जारी था, जबकि बैनिक अधिकारियों के चेहरों पर निराशा के भाव क्षण-प्रतिक्षण बढ़ते ही जा रहे थे।

समझ में नहीं आ रहा कि उन्हें काबू में करने के लिये क्या उपाय करें?

बाम, मुझे तो इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि उनकी ओर से कोई जवाबी आक्रमण क्यों नहीं हो रहा। वे लौटा बिल्कुल वानोश हैं!



लबी वे चौंके—

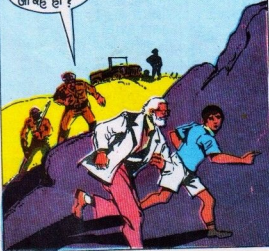
अरे, वह लड़का और बूढ़ा कौन है, और पहले-द्वारों के रहते वे यहां तक कैसे आ पहुंचे?

मेजर, उन्हें तुबलत को, वबना वे इस गोलीबारी के शिकार हो जायेंगे।



सुन्नत ही—

रे-रे क्वो, उधर कहाँ मगने जा रहे हो?



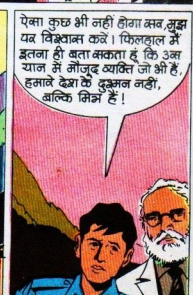
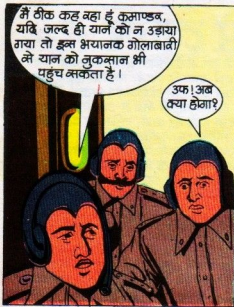
इधर यान के भीतर अचानक एक गंभीर समस्या उत्पन्न हुई।

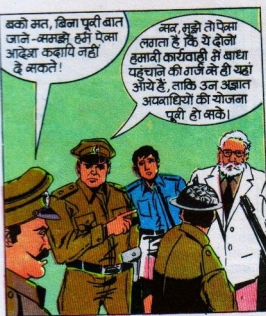
गजब हो गया कमाण्डर, सुबक्षा किरणों के कन्ट्रोलिंग यंत्र में कोई खराबी आ गई है और यान सुबक्षा किरणों से मुक्त हो चुका है।

क्या कह रहे हो?

ओ माई गॉड!

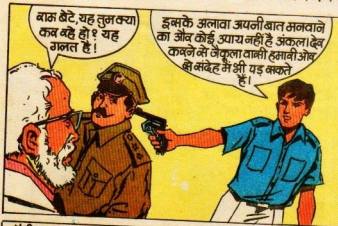






और राम ने संक्षेप में उन्हें सबका किस्सा कह सुनाया।





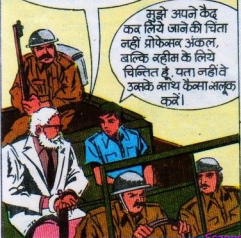
तभी कर्नल श्याम ने क्रोध में भावकर राम के चेहरे पर एक जोरदार धुंसा बरसीद किया।



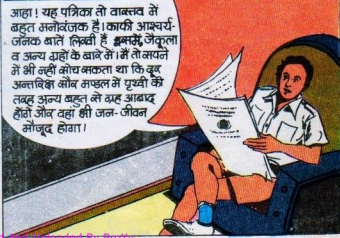
झींघ ही प्रो० भावकर और राम को निरपराध कल जैनिक काफिला वहाँ से वापस लौट पड़ा।



चिन्ता मत करो बेटे! उच्चाधिकारियों से बात करके मैं सब ठीक कर लूंगा। हम ज़्यादा समय तक इनकी कैद में नहीं रहेंगे।



उधर जैकूला यान के भीतर एक कमरे में बैठा वहीम किसी पत्रिका को पढ़ने में मग्न था। उसे न तो यान के उड़ान भङ्गने के विषय में पता था और न ही यान पर होने वाले भारतीय आक्रमण के विषय में ही कुछ बताया गया था।



तभी चिन्तित कमाण्डर जोबो ने वहाँ प्रवेश किया और उसे देखते ही बहीम उत्सुकता से बोल उठा —

हैलो कमाण्डर, क्या मेरा भाई और प्रोफेसर आ गये ?

नहीं, और अब शायद ही कभी तुम्हारे ऊपर मुलाकात हो!

क्या मतलब ?

तब कमाण्डर जोबो ने उसे यान पर हुए आक्रमण और सुब्रह्मा किरणों के यंत्र में आई बकाबी के कारण वापस अपने गृह लौटने के बारे में सबकुछ बताया।

ओह ! अब क्या होगा, कमांडर — डर ! वाम मेरे लिये अवश्य ही चिन्तित हो रहा होगा !

धबराओ नहीं बेटे, हम कोशिश करेंगे कि अपने गृह को दूसरा यान लेकर पुनः पृथ्वी पर जायें और अपने अधूरे मिशन को पूरा करें !

परन्तु बहीम ने तो जैसे उसकी बात की ओर ध्यान ही नहीं दिया था। वह अपने ही विचारों में खो चुका था।

अक ! क्या अब मैं जीवन-भर वाम से नहीं मिल पाऊंगा, क्या मेरी बाकी की जिन्दगी जैकूला गृह में ही बीतेगी ? ओह ! यह सब क्या हो गया ?

इधर सैनिक छावनी में —

मैं तुम दोनों को अन्तिम बार चेतावनी देता हूँ। अब भी बता दो कि कौन से वे लोग और तुम दोनों का उनसे क्या सम्बन्ध है, वरना हमें दूसरे तरीके से तुम्हें बखुलवाना पड़ेगा।

हम सच्चाई आपको बता चुके हैं आफिसर ! आप ग्यारह ही हमें परेशान कर रहे हैं।

बकवास बन्द करो, हम तुम्हारी बात पर कोई विश्वास नहीं कर सकते। शला दूसरे ग्रह के वास्ते से तुम लोगों की कैसे जान-पहचान हो सकती है। जबकि कोई भयानक मुजरिम होंगे, जो आधुनिक यान और वैज्ञानिक शक्ति से सम्पन्न थे। तथा यहाँ किसी अयानक उद्देश्य से आये थे !

मैं आपको कई बार कह चुका हूँ कि मुझे आप उच्चाधिकारियों को फोन करने दें, तब आपकी विश्वास हो जायेगा कि हमने जो कुछ भी आपको कहा वह सच है। मेरी अन्तर्विज्ञान यात्रा के बारे में केवल सबकार ही जानती है और सबकार ने यह बात किसी कारणवश गुप्त ही रखी है।

सुनकर कर्नल श्याम क्रोध से पकड़म चीख उठा —

नहीं, हरगिज नहीं जब तक हमें अपने प्रश्नों का उत्तर नहीं मिल जाता तुम्हें किसी से भी बात करने की इजाजत नहीं दी जायेगी।

ठीक है आफिसर, तब आप जो उचित समझें कीजिये। अब आपके प्रश्नों का उत्तर देना तो वर हम कुछ कहने के लिये भी मुँह नहीं खोलेंगे।





लेकिन राम और प्रोफेसर ने लाकर पीड़ा होने के बावजूद भी अपनी जुबान बंद ही रखी। यह देव कर्नल श्याम, केप्टन को सम्बोधित कर क्रोध से फिफ चीख उठा—



लेकिन कर्नल श्याम के दिल में उनके प्रति जवा भी बहम नहीं उपजा। परिणाम - वक्रूप उस भयानक चालाकी से झुल न कर सकने के कारण राम और प्रो. भावकर बेहोश होकर अपनी-अपनी कुर्सियों पर लुढ़क गये।



अगले दिन के तमाम समाचार-पत्र जैकूला याब के वायस लैट जाने और राम व प्रोफेसर की गिरफ्तारी के समाचारों से भरे पड़े थे। हालांकि कर्नल श्याम ने उन दोनों की गिरफ्तारी को काफी गुप्त रखा था, लेकिन न जाने कैसे अबकाब वालों को इस की खबर लग गई थी।



जब वह समाचार वाम के माता-पिता, बाधादेवी और कर्नल राघव ने पढ़ा।

नहीं-नहीं हमारा वाम अपराधियों का साथी नहीं हो सकता। यह सब झूठ है।

धीरेज ब्रह्मो बाधा!
सब ठीक हो जायगा। मुझे नाम पर पूरा विश्वास है। वह जल्द नैतिक अधिकारियों की किसी गलतफहमी का शिकार हुआ है। मैं अभी उच्चाधिकारियों से बात करता हूँ।

वह समाचार पढ़कर डबल सीक्रेट एजेंट 00½ विभागा के चीफ मि. मुखर्जी भी चिन्तित हो उठे।

वाम और प्रोफेसर भास्कर शिवफावर! उफ, यह जो कुछ भी हुआ, अच्छा नहीं हुआ। मुझे जल्दी से कुछ कबलों चाहिये, वरना उन्हें टार्यब भी किया जा सकता है!

शीघ्र ही वे तैयार होकर उच्चाधिकारियों से मिलने चल पड़े।

समझ में नहीं आता कि वाम ने मुझसे उन अज्ञात यान-वाहियों से मिलने की बात क्यों छिपाई और वहीम का जिक्र उसके साथ अवबानों में क्यों नहीं आया? क्या वह उस समय उनके साथ नहीं था?

उधर अवबानों ने छपे उन्ही समाचारों को पढ़कर कर्नल श्याम अपने जूनियर अफिसरों पर बिफर रहा था।

मैं पूछता हूँ कि आखिर उन दोनों के हमारी कैद में होने की बखब अवबान वालों को कैसे लगा गई, जबकि मैंने आप लोगों से इस बात को गुप्त रखने की सख्त हिदायत दी थी।

वैश्वाव
कीजिए अब, यह बात हमारी ओर से बिल्कुल भी आऊट नहीं हुई है।

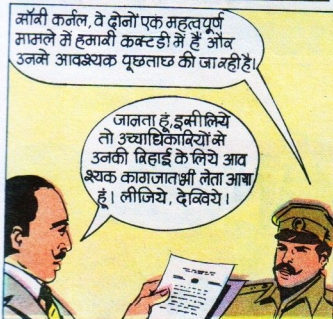
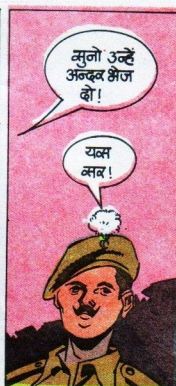
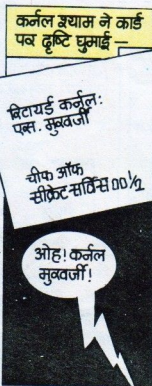
तो क्या मैं यह समझूँ कि उन दोनों कैदियों ने ही अवबान वालों को यह सब कुछ बताया है!

व...वह...
सब...!

यकन इसके पहले कि मेजर अपनी बात पूरी कर पाता प्रुक अईली ने भीतर प्रवेश किया।

क्या बात है
जवान? मैंने तुम्हें डिस्टर्ब करने के लिये मना किया था ना।

मौत से टक्कर



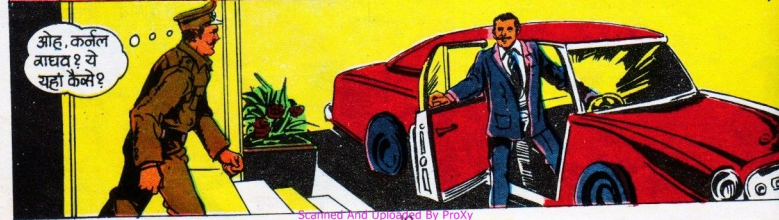


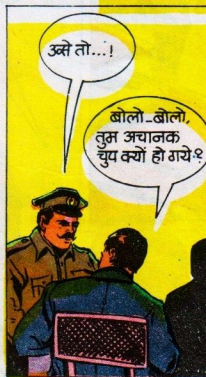
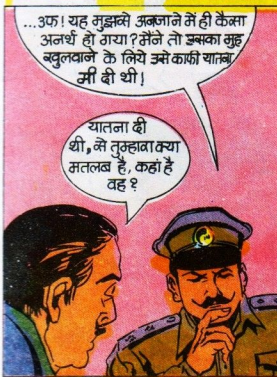
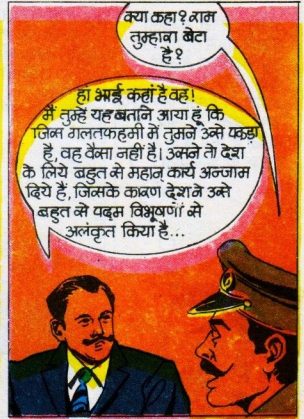
फिर चीफ मुब्तजी प्रो. भास्कर और वाम को लेकर वहां से चल दिये।

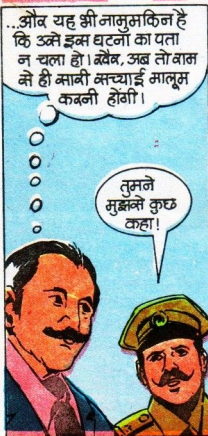
एक जबबदस्त कामयाबी हाथ लगते-लगते वह गई, लेकिन सम्मेलन में नहीं आता कि उच्चाधिकारियों ने क्या-क्या जानते-सुझते भी वाम और प्रो. भास्कर की विहाई के आर्डर कैसे दे दिये?



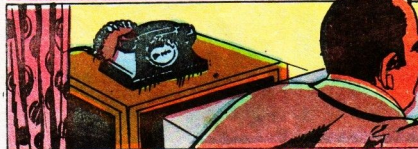
काब निकट आकर ककी और उसमें से कर्नल बाघव उतरे। कर्नल श्याम शायद कर्नल बाघव से भली-भांति परिचित था।







उधर बाल क्रीकट सर्किस के हैडक्वार्टर में पहुंचकर जब वाम ने चीफ मुखवर्जी को सारी कहानी सुनाई-



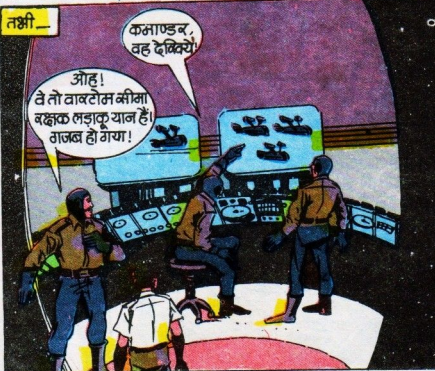
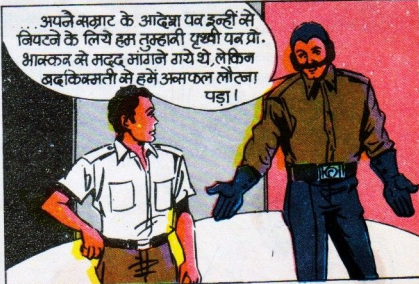




इधर अपने कमरे में पहुँचकर राम भी बिखर पक
निब फूट-फूटकर बौ घड़ा -



जबकि उधर दूर आकाश गंगा में...



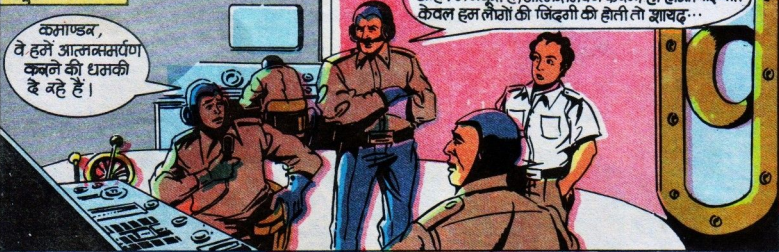
वे वास्तव में वाबटोम के शक्तिशाली लड़ाकू यान थे, जिन्होंने पलक झपकते ही जैकूला यान को अपने घेरे में ले लिया।



वाबटोम के एक यान के भीतर...

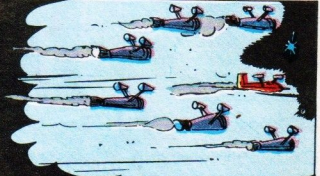


जैकूला यान में...





कमाण्डर जोबो के आदमी ने तुलन्त अपने बड़े के अन्तर्विक्षा कन्ट्रोल से सम्पर्क करके सारी स्थिति की सूचना दे दी, जबकि उनके आत्मसमर्पण करते ही वाबटोम के यान उनके यान की अपने घेरे में लिये अपने बड़े की ओर बढ़ चले थे।



कुछ देर बाद—



शीघ्र ही वाबटोम के यानों के साथ जैकूला यान ने भी वाबटोम की धरती पर लैंड किया, लेकिन जैसे ही कमाण्डर जोबो वहीम और कर्नल टोयो आदि यान से बाहर निकले उन्हें वाबटोम के अनेक सशस्त्र सैनिकों ने अपने घेरे में ले लिया।



ले चलो इन्हें महम्महिम के पास। वे ही इनसे युध्ताछ और इनकी मौत और जिन्दगी का फैसला करवेंगे।

उफ! अब शायद ही कभी वाम भाइया और अंकल-आटी से मुलाकात हो!

ठीक उसी समय पृथ्वी पर...

वहीम... नहीं... नहीं... तुम्हें कुछ नहीं हो सकता वहीम...



वहीम को ही सम्बन्धित कोई भयानक सपना देखकर रात चीख उठा।

उसकी चीख सुनकर उसके समीप डैडी घबराप से उसके कमरे में पहुंचे।

क्या हुआ बेटे! तुम क्यों रो रहे हो?



उस चीखे क्यों थे राम? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है ना



डैडी मैंने सपने में देखा कि कुछ भयानक इन्सान वहीम को मौत के घाट उतारने की तैयारी कर रहे हैं और वहीम महायत्ना के लिये मुझे पुकार रहा है।



नहीं... नहीं... पेसा मत कहो बेटा।

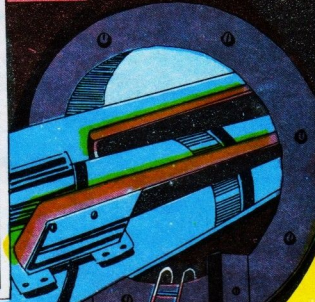
बोओ मत बेटे, वहीम को कुछ नहीं होगा। एक-न-एक दिन वह जल्द हमें मिलेगा, तुमने एक भयानक सपना देखा है और सपने हकीकत नहीं होते...



...लो, पानी पियो और सो जाओ।



इसी तरह एक-एक कर दिन बीतते रहे। इधर प्रोफेसर भाकर अपने यान को सम्पूर्ण करने में व्यस्त थे...



और अंध दूर अन्तर्विक्षा में वाबटोम ग्रह जैकूला पर लगाताव आक्रमण कर रहा था।



जबकि जैकूला ग्रह का शासक महामहिम मन्डीला वाबटोम द्वारा किये जा रहे आक्रमणों को रोक पाने में पूरी तबह लाचाव विवश और असहाय था।

और एक दिन जब वाबटोम ग्रह ने जैकूला पर युगः भयानक आक्रमण किया।

हो-हो, अब हम बेकाब में अपने प्राण नहीं रोकवाना चाहते। वापस लौट चलने में ही भलाई है।

हम इनको मुका-बला कबले में बिल्कुल असमर्थ हैं। इनको युद्ध कबला जान-बुझ कर मौत की गाले लगाना है, वापस लौट पलो।



और जैकूला की हवाई बेना मैदान छोड़कर भाग बखड़ी हुई।

हा... हा... हा... दुश्मनों ने फिर मैदान छोड़ दिया। अब वह दिन दूर नहीं, जब जैकूला पर हमारे बमकाट ओगाव का सम्पूर्ण आधि-काव होगा। चलो वापस लौट चलो।

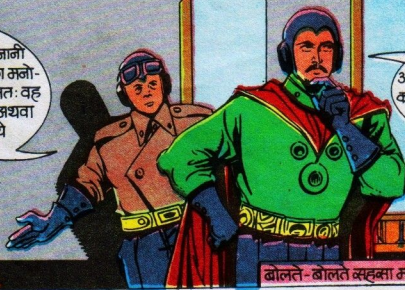


ओह! लगता है वाबटोम हमारे ग्रह को तबाह करके ही छोड़ेगा।



जेकूला का एयर मार्शल पियानो महामहिम मंडोला से मिला।

महामहिम, बाबू-बाबू की हवा और जानी लुक्मान को हवाई सेना का मनो-बल पूरी तरह डूट चुका है, अतः वह वायुसेना से युद्ध करने अथवा सुकालता कबने के लिये कतई तैयार नहीं।

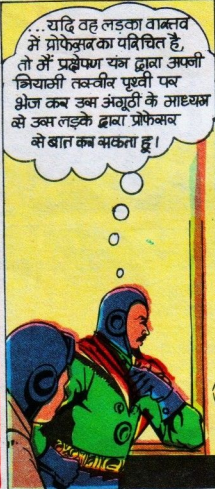
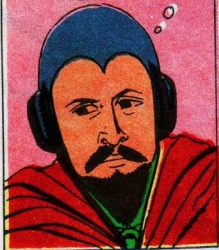


उफ! कुछ समझ में नहीं आता कि हम क्या करें और क्या नहीं, काश! हम प्रोफेक्टर भास्कर को यहाँ ला पाने में...

बोलते-बोलते ब्रह्मा महामहिम मंडोला ब्यामोश हो गये।

कमांडर मंडोला के दिमाग में अचानक ही एक विचार आया—

कमांडर जेब्रो ने अपने अन्तिम संदेश में बताया था कि मेरी दी हुई अंगुठी उसने प्रो. भास्कर के ही परिचित एक लड़के राम को सौंप दी थी, जिसका माथी उसके ही पास अमानत के रूप में रह गया था...



... यदि वह लड़का वास्तव में प्रोफेक्टर का परिचित है, तो मैं प्रक्षेपण यंत्र द्वारा अपनी त्रियाक्षी तक्वीर पृथ्वी पर भेज कर उस अंगुठी के माध्यम से उस लड़के द्वारा प्रोफेक्टर से बात कर सकता हूँ।

आप क्या सोचने लगे महामहिम?



सुनिये मार्शल, हमारे दिमाग में एक विचार आया है। कमाण्डर जेब्रो के अन्तिम संदेशानुसार...

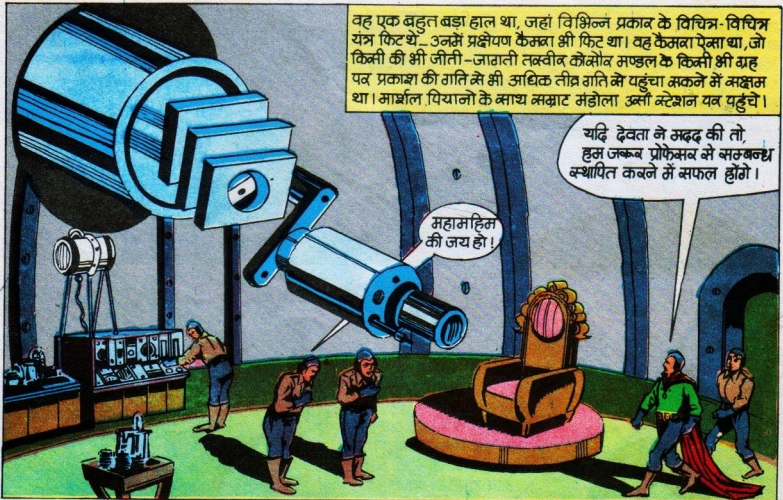
फिर वह मार्शल पियानो को अपने विचारों से अवगत कराने लगा।

मुनकर मार्शल पियानो हर्ष से उछलता हुआ बोला—

आहा! महामहिम, यह बात आपने हमें पहले क्यों नहीं बताई। मेरे विचार से हमें तुरन्त प्रक्षेपण स्टेशन चल कर पृथ्वी पर त्रियाक्षी तक्वीरें भेजनी चाहियें... आपकी अंगुठी जिसके भी पास इस समय होगी, त्रियाक्षी तक्वीरें आसानी से उस तक पहुँच जायेंगी। फिर इसके माध्यम से प्रोफेक्टर तक आसानी से पहुँचा जा सकता है।



आप ठीक कहते हैं मार्शल, आइये चलें।



प्रक्षेपण कैमरे के कामने यह चक्र महामहिम मंडला पहले से ही वहाँ बसे एक सिंहासन पर बैठ गये।

और प्रक्षेपण यंत्र यानी उस विचित्र कैमरे के आपरेटों ने जैसे ही कैमरे को ऑन किया—



अद्भुत था उनका विज्ञान। पलक झपकने के साथ ही सम्राट मंडोला की कुछ जीती-जागती तबदीब आकाश को होकर अत्यंत ही तीव्र गति के साथ पृथ्वी की ओर प्रेषित होने लगीं।



ब्रह्मण्ड पृथ्वी के अनेक देशों में से एक देश भारत में —

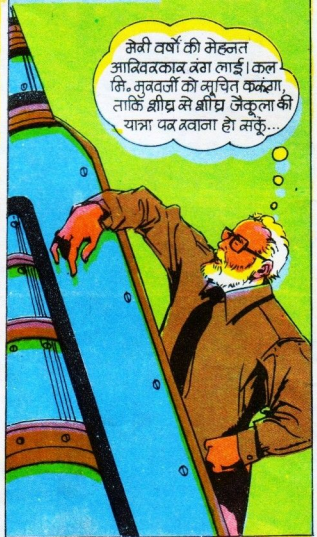
काम खत्म हुआ।
यान अब पूरी तरह उड़ान भरण में सक्षम हैं। आप सब जाकर आवागम करें। यान के सम्पूर्ण काम तैयार हो जाने की खुशी में मैं आप लोगों को एक साह की पूर्ण छुट्टी देता हूँ।

धन्यवाद प्रोफेसर!



सबके जाने के बाद —

मेरी वर्षों की मेहनत आबिबक्ताब बंता लाई। कल मैं मुबवर्जी को सूचित करूँगा, ताकि श्रीघ को श्रीघ जैकुला की यात्रा पर बवाना हो सके...



...सिन्न मंडोला की यह विभिन्न अगुठी, टैपलिकाईब होने के साथ-साथ दिशा सूचक यंत्र भी हैं। अतः मुझे जैकुला ग्रह पहुंचने में कोई कठिनाई नहीं होगी!

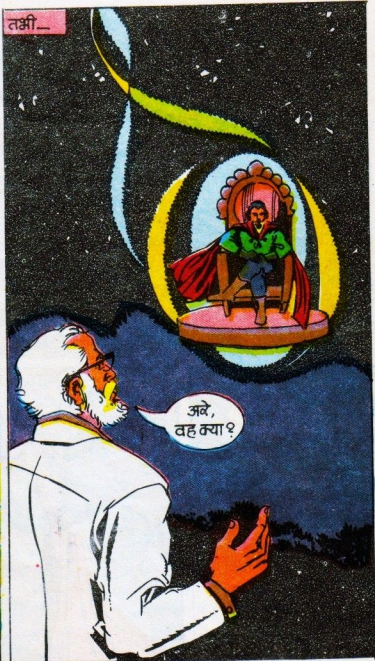


फिर प्रोफेसर वूली काम लेने के लिये बाहर बने द्वार में निकल आये।

रात के समय अन्तर्विक्ष का नज़ारा कितना सुन्दर लगता है और इन सितारों और उल्काओं के मध्य से होकर आकाश गंगा की सैब कबना, आहा! निःसन्देह मैं खुशकिस्मत हूँ, जो मुझे अन्तर्विक्ष की अनेकों बातें सब कबके आनन्द उठाने का मौका मिला।



तभी—



अरे, वह क्या?

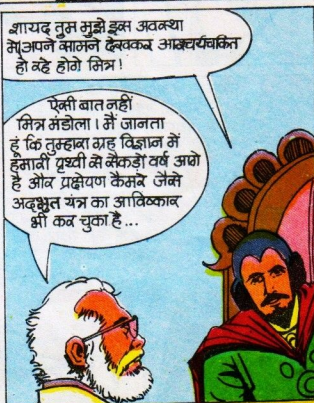
वह वास्तव में महामहिम मंडोला की जियामी तस्वीर ही थी, जो ठीक प्रोफेसर के कामने पहुँचकर वायुमंडल में स्थिर हो गई।



सम्राट मंडोला!

आहा! भास्कर! देवता का शुक है कि तुम मिल गये!

शायद तुम मुझे इस अवस्था में अपने कामने देखकर आश्चर्यचकित हो रहे होंगे मित्र।

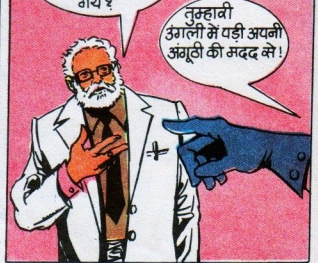


ऐसी बात नहीं मित्र मंडोला। मैं जानता हूँ कि तुम्हारा यह विज्ञान में हमारी पृथ्वी से सैकड़ों वर्ष अग्रे है और प्रक्षेपण कैमरे जैसे अदभुत यंत्र का आविष्कार भी कर चुका है...

...उसी कैमरे के चमत्कार से तुम्हारी निचाली तस्वीर लगाता है मुझे हलकत करती दिववाइ दे रही है। कीक पर पर्व दिववाइ देने वाले किसी चलचित्र के समान !



लेकिन मित्र, मुझे इस बात का आश्चर्य भी है कि तुम मेरी इस प्रयोगशाला तक पहुँच कैसे गये ?



ओह !



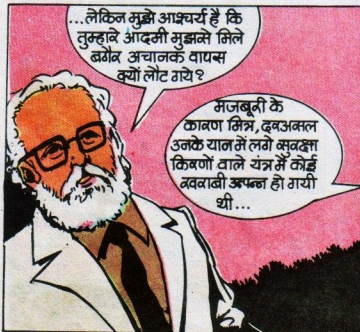
सुनो प्रोफेसर, मुझे तुम्हारी क्हायता की सख्त आवश्यकता है। मैं चाहता हूँ कि तुम किसी प्रकार मेरे यहाँ पर आ जाओ और दुश्मनों से निपटने में मेरी मदद करो।



तुम्हारा मन्देश मुझे तक पहुँच गया था मित्र...

...लेकिन मुझे आश्चर्य है कि तुम्हारे आदमी मुझसे मिले ख़रीब अचानक वापस क्यों लौट गये ?

मंजबूरी के कारण मित्र, दबअकल उनके यान में लगे सख्त किरणों वाले यंत्र में कोई ख़राबी अफ़्फ़न हो गयी थी...



...और ऐसी अवस्था में जबकि तुम्हारा देश हमारे यान पर आक्रमण कर रहा था, उनका बिना सुबधा किरणों के वहाँ रहना ख़तरे से ख़ाली नहीं था।

ओह !



फिर साम्राट मंडोला ने प्रोफेसर भास्कर को क्रमानुसार जोबो के साथ जो पृथ्वी पर लीती थी, वह साक्षी कहानी कह सुनाई। साथ ही यह भी बताया कि क्रमांडव जोबो आदि के साथ-साथ उनका परिचित वहीम भी पड़ोसी दुश्मन वाटोम के हाथ लग गया है और इस समय वे सब दुश्मनों की ही कैद में हैं। सबकुछ जान कर प्रोफेसर भास्कर व्याकुल एवं चिन्तित हो उठे।

मित्र मंडोला,
जो हुआ वह बुढ़ा ही हुआ।
वैव, मैं अन्तरिक्ष यात्रा
के लिये अपना यान तैयार कर
चुका हूँ। कोशिश करूँगा कि कल ही
तुम्हारे ग्रह के लिये वापस
हो सकूँ !

धन्यवाद
मित्र ! मैं तुम्हाबा
यह एहसान कभी नहीं
भूलूँगा...

... अच्छा,
विदा मेरे प्रिय मित्र !
प्रक्षेपण यंत्र ज्यादा समय तक
मेरी तस्वीर कायम नहीं कर
सकता। मैं अपने ग्रह पर तुम्हारे
पहुँचने की प्रतीक्षा
करूँगा...

अब वाम और मि. सुवर्णी
को फोन पर साक्षी स्थिति से
अवगत करा दें !

ओह ! इतनी बात
गये किस्का फोन
हो सकता है ?

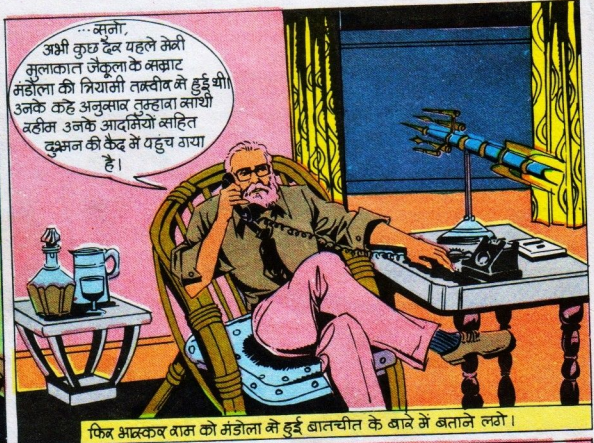
दिन-दिन-दिन

... लेकिन सावधान
मित्र ! हमारे ग्रह की
सीमा पर दुश्मन वाटोम
तुम्हें बोकने की पूरी
कोशिश करेगा !

चिन्ता मत
करो ! उनका मुँह
तोड़ जवाब देने की भी
मैं पूरी तैयारी कर
सुका हूँ।

अगले पल मंडोला की नियामी आकृति
अदृश्य हो गयी।

मनोज चित्रकथा



बास फटाफट तैयार हुआ और—

मम्मी की नजरों से बचकर बाहर निकलने के लिये यही वास्ता उपयुक्त है!

वीराज ने जाकर बास ने चुपचाप अपनी मोटार साइकिल बाहर निकाली और उसे बिना स्टार्ट किये ही बंगले से बाहर साइक पर निकल आया, फिर अगले ही पल—

मुझे घर पर न याकर मम्मी-डैडी परेशान जल्द हो लेंगे लेकिन मजबूरी है। उन्हें बता देता तो कदापि मुझे इस व्यतवनाक अंतरिक्ष यात्रा पर नहीं जाने देते!



कुछ ही देर बाद वह बाल क्रिकेट मैकर्स के चीफ मि. मुखर्जी के सामने था।

यह कैसे संभव हो सकता है बास! इतनी जल्दी में अला प्रोफेसर के साथ जाने के लिये उपयुक्त आदमियों का इन्तजाम कैसे कर सकता हूँ? कम-से-कम मुझे इसके लिये दो दिन का समय चाहिए।

आदमियों की कोई ज़रूरत नहीं चीफ, मैं अकेला ही प्रोफेसर के साथ जाऊंगा।

यह तुम क्या कह रहे हो। तुम अकेले प्रोफेसर के साथ जाओगे। नहीं, मैं ब्रसकी डूजाजत हरगिम् नही दे सकता। यह कोई साधारण अभियान नहीं है।



समय कम है चीफ! रहीम दुश्मनो की कैद में फंसा जिन्दगी का एक-एक क्षण गिन रहा होगा। अतः मैं किसी कीमत पर नहीं रुक सकता।

लेकिन...!

वहम में समय बर्बाद न करके मुझे आज्ञा दीजिये चीफ! रहीम का जीवन बचाने के लिये हमारा तुरन्त बचाना हो जाना ही अच्छा है। यदि उसे कुछ हो गया तो मैं कभी अपने आपको माफ नहीं कर सकूंगा।



मनोज चित्रकथा

और चीफ मुक्कजी को आविष्कार बाम की जिद के आगे झुकना ही पड़ा।

ठीक हैं। यदि तुम नहीं मानते तो जाओ। मैं ईश्वर से तुम्हारी सफलता की प्रार्थना करेगा।

यू आब गेट चीफ अंकल! अब मैं चला हूँ।



ठहरो, प्रोफेसर की प्रयोग-शाला तक मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

तब जल्दी कीजिये मुझे ग्यारह बजे से पहले-पहले उनके यहाँ पहुँचना है।



कुछ ही देर बाद -

बाम बेटे, तुम्हें घर से अचानक ही लापता पाकर तुम्हारे मम्मी-डैडी बहुत परेशान होंगे। यदि उन्होंने इस सम्बंध में मुझसे पूछा तो मैं उन्हें क्या जवाब दूँगा?

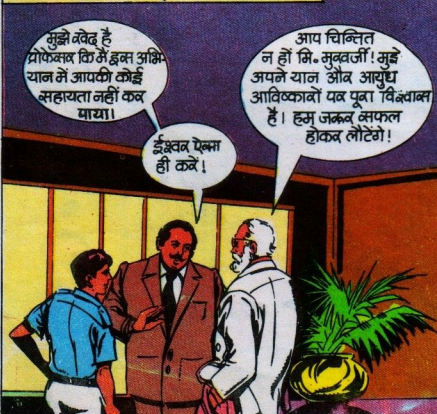


मुझे आप पर विश्वास है चीफ अंकल कि आप उन्हें समझा देंगे।

तुम बहुत चालाक हो, अपनी करेशानी सेवर्सिंग डाल दी...वेव, देवदूंगा!



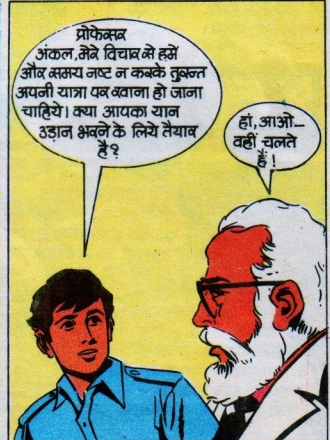
लगभग आधे घंटे पश्चात् वे प्रोफेसर के कामने थे।



मुझे वेद है प्रोफेसर कि मैं इस अभियान में आपकी कोई सहायता नहीं कर पाया।

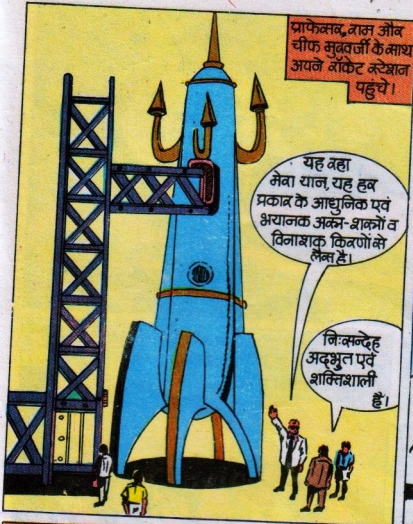
ईश्वर ऐसा ही करे!

आप चिन्तित न हों मि. मुक्कजी! मुझे अपने यान और आयुध आविष्कारों पर पूरा विश्वास है। हम जरूर सफल होकर लौटेंगे!



प्रोफेसर अंकल, मेरे विचार से हमें और समय नष्ट न करके तुरन्त अपनी यात्रा पर बरवाना हो जाना चाहिये। क्या आपका यान उड़ान भरण के लिये तैयार है?

हाँ, आओ-वहाँ चलते हैं!



चीफ मुद्रवर्जी और प्राफेसर के आश्चर्यों ने प्राफेसर और वामन को भावभीनी बिबाई दी।



प्रोफेसर भास्कर का आधुनिक यान प्रकाश की गति से भी अधिक गति से पृथ्वी की आकर्षण शक्ति को भेदकर आकाश गंगा में जा पहुँचा।

वाह!
जपान में भी ऐसा नजारा
कभी नहीं देखा। वैसे अंकल
हमें जैकला ग्रह में प्रवेश
करने में कितना
समय लगागा?

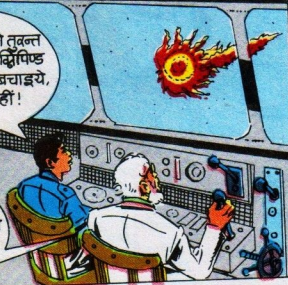
लगभग
तीन घण्टे। इस समय
हमारा यान पाँच हजार प्रकाश
वर्ष प्रति घण्टे की गति
से उड़ रहा है।



तभी—

बाप रे!
अंकल, यान को तुम्हने
उस विशाल अग्निपिण्ड
से टकराने से बचाइये,
वना वकैर नहीं!

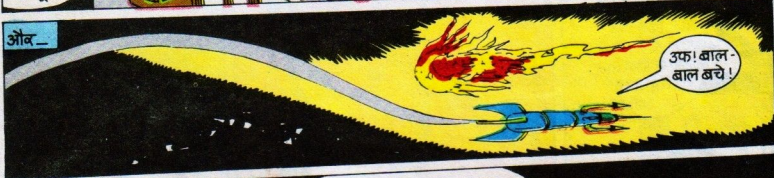
धनबाओ
नहीं, मैं यान को
उसकी सीध से
अलग कर
रहा हूँ!



कहने के साथ ही प्रोफेसर ने सामने कन्ट्रोल बोर्ड पर लगे
बहुत से स्विचों में से कुछ को दबाया। तुरन्त ही यान के
कक्ष में परिवर्तन हुआ।



और—



उफ! बाल-
बाल बचे!

इसी प्रकार कई उल्काओं पर अग्रहों के
कक्ष से दूर लगाकर तीन घण्टे पश्चात्—

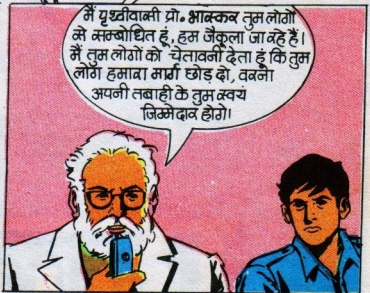
राम बेटे, वह देखो... वह जो सितारा
तुम देख रहे हो, वही जैकला ग्रह है!

और वह
कौन-सा ग्रह
है अंकल?





बीघ्र ही वाइरोम के उन लड़ाकू यानों ने प्रोफेसर के यान को घावों और लगे अपने घरे में ले लिया और उनसे सम्पर्क जोड़ा...



वाइरोम के एक यान के भीतर-

